Vol 3 Issue 6 March 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 6 | March. 2014
ISSN:-2249-894X

Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

“सोमवंशीय पाण्डववंशीय क्षत्रिय भीमसेन + हिडिम्बा की वंशावली”

चन्द्रिकासिंह सोमवंशी , जशवन्तकुमार प्रेमजी भाई चौधरी

रिसर्च स्कॉलर.
श्री. पी.एन पाण्डेया आर्टस, एम.पी. पाण्डेया सहना ऐण्ड डी.पी. पाण्डेया कॉमर्स कॉलेज,
सन्तरामपुर रोड, लूनावाडा . (Gujarat).

सारांश :

घटोत्कच की माँ हिडिम्बा और उसका नाना हटिका का सम्बन्ध प्रसिध्द राजा नरकासुर से था। यह नरकासुर दीर्धजीबी था। यह कामरुप आसाम के प्राग्ज्योतिषपुर का राजा था। इसका ही पुत्र भगवदत्त महाभारत युध्द में कौरवों की ओर से लडता हुआ मारा गया था। उसका पूर्वज नरकासुर उन्हीं मूल प्राच्य–असुरों की सन्तान में से था। विरोंचन प्रथम का पुत्र प्रसिध्द राजा बलि था, जिसका पुत्र जगत–प्रसिध्द बाणासुर था। हिडिम्बाबन (भृगुकच्छ अर्थात् भरुच के आस पास के घने जंगली प्रदेश का राजा) का राजा हिडिम्ब और हिडिम्बा का पिता राक्षस राज हटिका था, जो नरकासुर का वंशज था। एक चक्रा नगरी में पाण्डव भीमसेन ने राक्षस बकासुर का बध किया था।

प्रस्तावना :

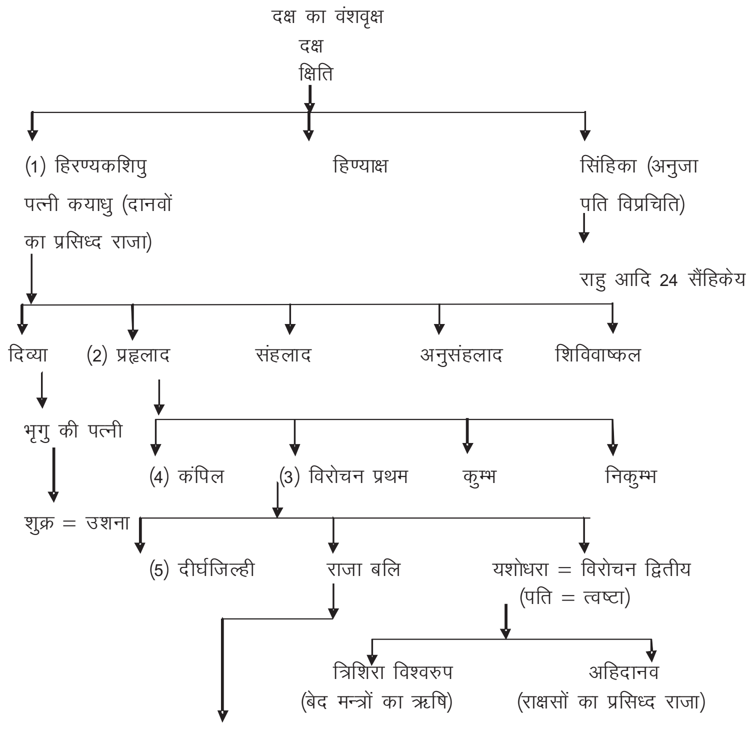

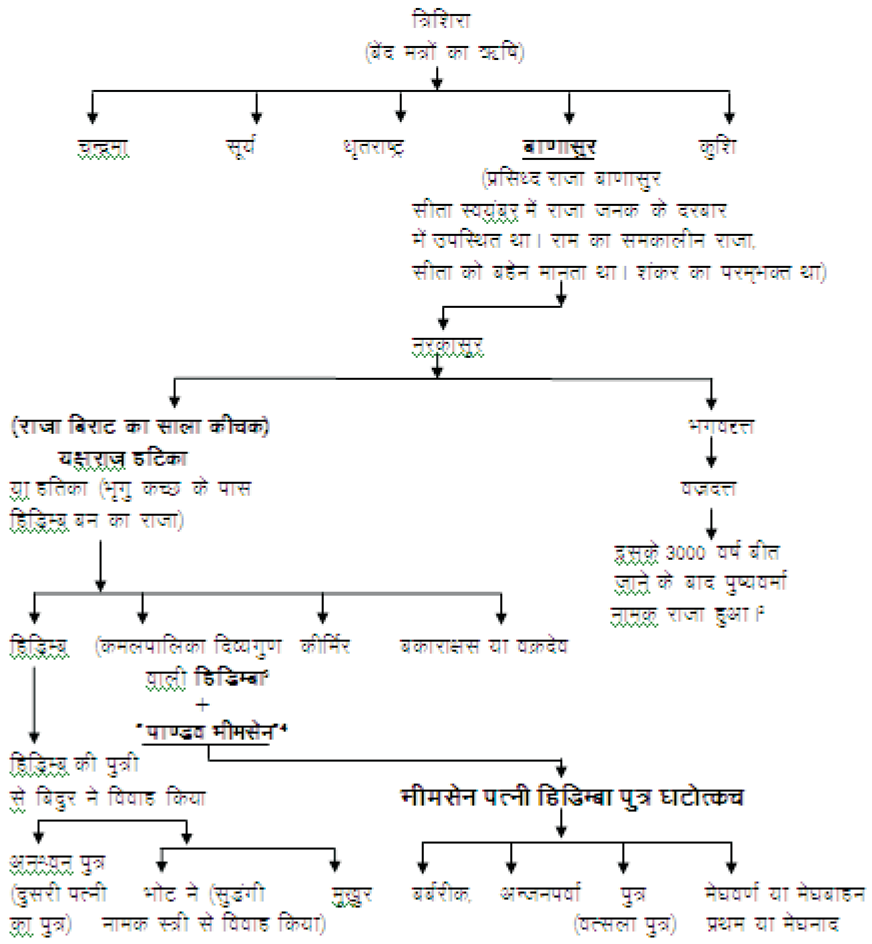

सोमवंशीय पाण्डव भीमसेन ने यक्षराज हटिका की पुत्री हिडिम्बा से शादी की और यहीं से घटोत्कच ⟶ (घरूका अपभ्रंश रूप) के वंशज आगे चलकर घरुका क्षत्रिय, वाहनवंशीय क्षत्रिय, राजवंशीय क्षत्रिय, रानावंशीय क्षत्रिय, बनाफरवंशीय क्षत्रिय, आदि रुपों में भारतवर्ष के कोने–कोने में घरवाल या घरोवाल क्षत्रिय, घटौतिया क्षत्रिय, भौमकर वंश, शूरवंश क्षत्रिय आदि रूपों में भारतवर्ष के कोने–कोने में विशाल संख्या में फैल गये। जिन क्षत्रियों ने कोई घराना नहीं बनाया, वे शुध्द पाण्डववंशीय सोमवंशीय क्षत्रिय माने गये और जिन लोगों ने घराने बना डाले, वे सभी घरानों के नाम से अलग – 2 जाने – पहचाने जाने लगे। सोमवंशीय पाण्डववंशीय क्षत्रियों को शिलालेखों में इस प्रकार निर्दिष्ट किया हुआ मिलता है। यथा :– 'परम्माहेश्वर–परम्भट्टारका–महा राजाधिराज परमेश्वर–सोम–कुल–तिलक–भूषणम् पाण्डववंशजम्' और 'त्रिकलिंगाधिपति' से विभूषित किया गया है। पाण्डवों के चाचा बिदुर ने हिडिम्बा की पुत्री से शादी की, जिससे दो पुत्र पैदा हुए भोट से भोटवंश चला, क्षत्रिय वंशावली में लिखा है कि भूटान के राजा इसी वंश के है। मुखुर दूसरा पुत्र था विदुर का, जिससे 'मुक्राह' नामक गाँव बसाया। कुल्लु का नाम बाद में हुआ, वह पहले 'मुक्रस' के नाम से जाना जाता था। भोट ने सुडंगी नामक स्त्री से विवाह किया। विदुर की दूसरी पत्नी से एक, पुत्र और था, नाम उसका अनश्वन था। नेपाल पर काफी क्षत्रियों ने राज्य किया है। ये राजा अपने को राजपूत एंव क्षत्रिय होने का दावा करते हुए अपनी उत्पत्ति सुर्यवंशी (Suraj-bansi) चन्द्रवंशी (Chandra-bansi) इस प्रकार सुर्य और चन्द्र से होने का दावा करते हैं। ये क्षत्रिय ब्रह्मक्षत्रिय तथा मलेच्छों के वंशज (Progeny) थे। इन नैपाली क्षत्रियों के बारे में विस्तार से देखिए श्री हैमिलटोन महोदय ★ की रिपोर्ट। गंडक नदी के आसपास में रहने वाले राना क्षत्रिय और भाट राना, मतवाला क्षत्रिय आदि मगर जाति (Magar Tribes) के थे। इन राजाओं में अथरापन्थी (Atharapanthi) देवकोट–पनडेल, बारापन्थी धुनाना–पवार और भाट (Bhat) मास्की आदि थें। ▲▲ नेपाल के पोखरा घाटी, नेपाल के जिले कास्की में स्थित, ठीवज परिवार बसे हुए थे। भूटान के हिन्दू राजपरिवार इसी पाण्डव घटोत्कचवंशी हैं। घाले (Ghale), घोटानी (Ghotani) नेपाल के सोमवंशी रानावंशी परिवार से सम्बधित होने के साथ ही साथ "ठाकुर नरेश" की पदबी धारण करते थे। अधिक विस्तार के लिए जानिये कैप्टन टी. स्मिथ ● और प्रोफेसर टर्नर की रिपोर्ट । राना बमबहादुरसिंह जो नेपाल में शासन कर रहे थे, वह भी पाण्डव भीमसेन के पुत्र घटोत्कच के वंशजों में से एक था। बिक्रमादित्य और

शालिबाहन, विक्रम संम्बत् 57 B.C. और 78 शक सम्बत् के प्रर्वतक थे जो कि पाण्डव घटोत्कचवंशीय क्षत्रिय थे। छोटेगढ़ के राजा ऋषि राजा राना आदि "राव" ●●, "रव", "भूपति राना" आदि उपाधियों से बिभूषित थे। करनाटिका वंश से सम्बन्ध रखने वाले 'श्री मुकुन्ददेव सेन' थे जिनका सम्बन्ध घटोत्कचवंशी सेनवंशीय क्षत्रिय बंगाल से सम्बंधित था। 12 नरेश ठाकुर वंश के, जो सोमवंशी परिवार के अन्तिम नरेश भास्कर बर्मन थे। सोमवंश के बाद 31 राजा सूर्यवंश के नेपाल पर राज्य किया। आसाम के ओहम, कछारी क्षत्रिय ◆ महाभारत के पाण्डव भीमसेन पुत्र घटोत्कच के ही वंशज हैं। कछारी राजा गोबिन्दचन्द्र और उसके भाई कृष्णाचन्द्र लगभग 1790 A.D. में हुए थे।❋ पाण्डव भीमसेन ने यक्षराज की कन्या"हिडिम्बा जिसका नाम कमलपालिका भी था, जो यक्षराज हटिका की पुत्री थी, से विवाह किया था। घटोत्कच इसी महाबाहु पाण्डव भीमसेन का पुत्र था। प्राग्ज्योतिषपुर के अन्तर्गत मणीपुर आता था, यहाँ के राजा मुरनामक दैत्य की पुत्री कामकंटकटा (मोर्वी) थी, जिससे शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करके घटोत्कच ने शादी की थी। भिन्दीपाल, तोमर, शूल इत्यादि अस्त्रों का प्रहार करके घटोत्कच महाभारत में लड़ा था। कर्ण की अमोघशक्ति से मारा गया। घटोत्कच की दूसरी पत्नी जो बलराम की सुपुत्री थी, जिसका नाम वत्सला था, कोई पुत्र था या कि नहीं, कुछ पता नहीं चलता। इसका एक पुत्र और था जो अपनी माता कामकन्टकटा के पास में ही हमेशा रहता था। उसका वंश आगे चला। लेकिन यक्षकन्या मुरनामक दैत्य की पुत्री मौर्बी (कामकन्टकटा) के गर्भ से घटोत्कच को कम से कम तीन पुत्र प्राप्त हुए। घटोत्कच + मौर्बी (कामकन्टकटा) मणीपुर नरेश मुर नामक दानवराज की पुत्री से तीन पुत्र पैदा हुए।

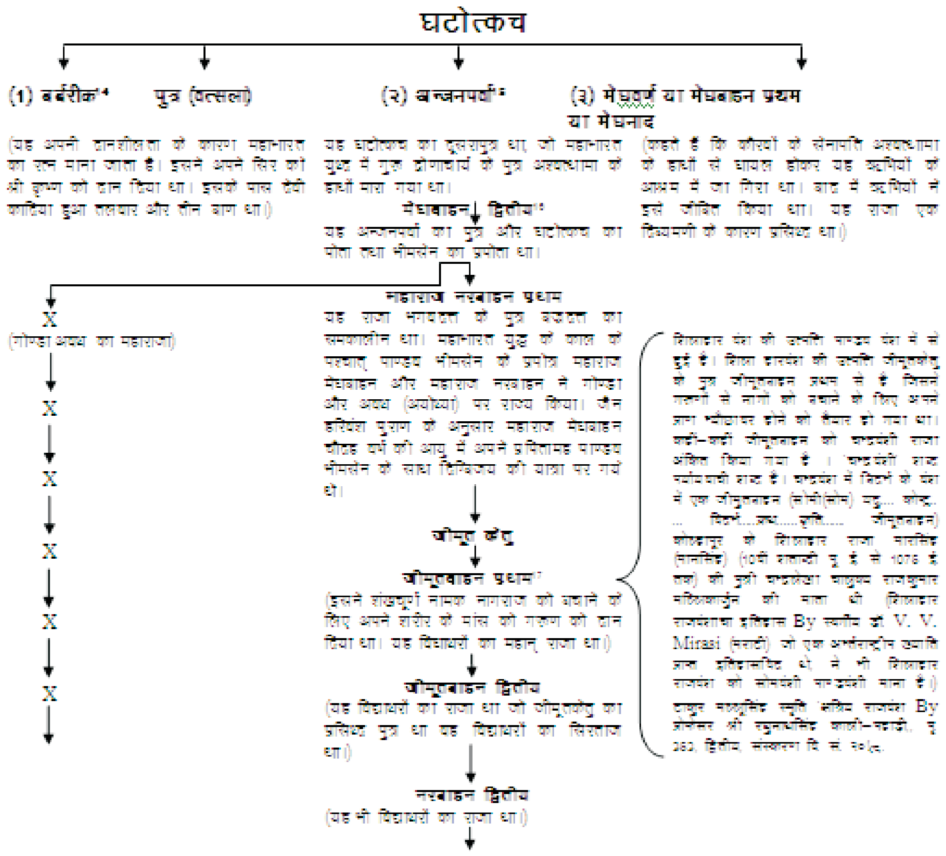

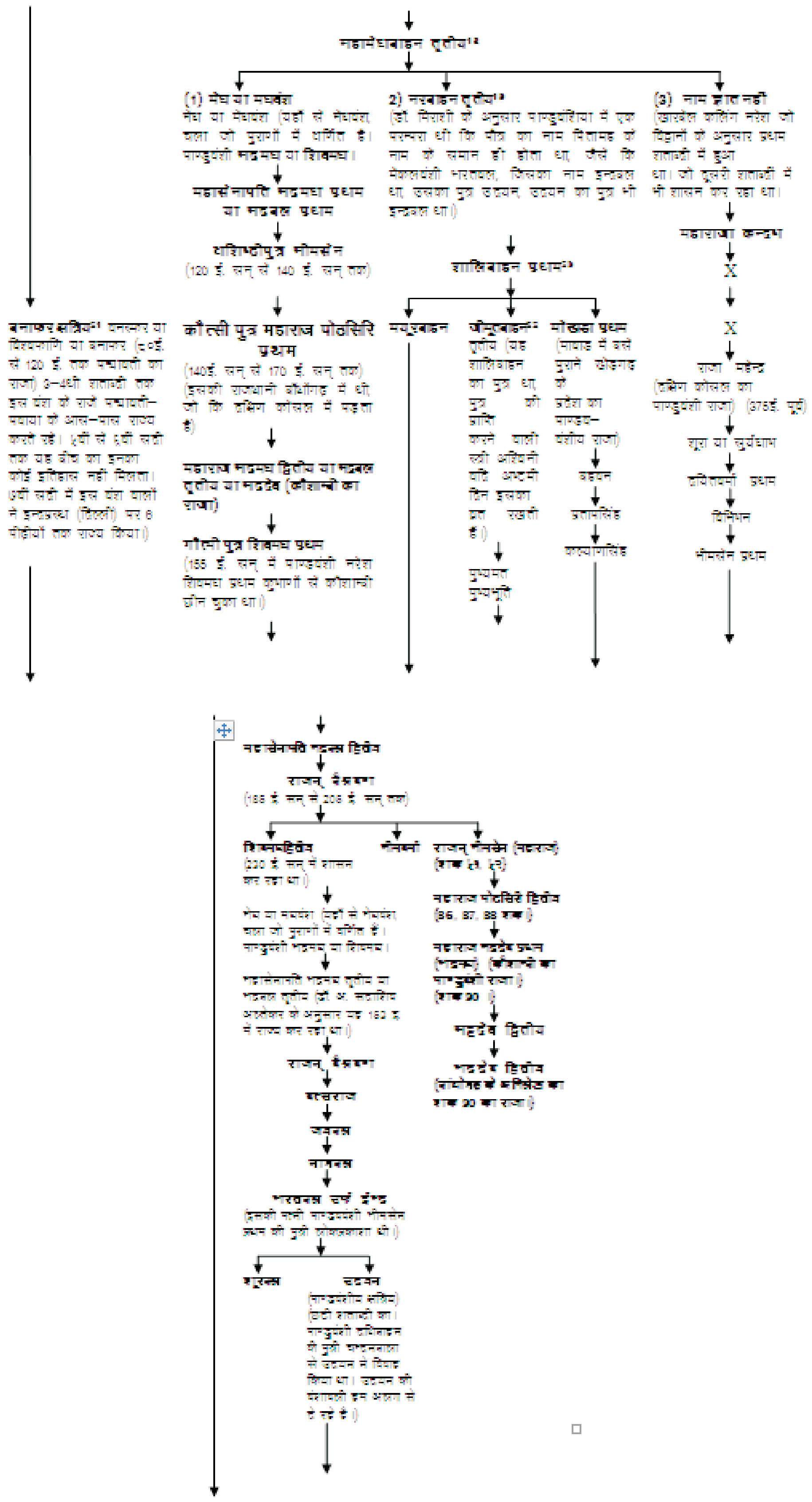
महामेघवाहन तृतीय
(1) मेघ या मघवंश
2) नरवाहन तृतीय
(3) नाम ज्ञात नहीं
वाशिष्ठीपुत्र भीमसेन
(120 ई. सन् से 140 ई. सन् तक)
शालिवाहन प्रथम
कौत्सी पुत्र महाराज पोठसिरि प्रथम
(140ई. सन् से 170 ई. सन् तक)
मयूरवाहन
X
X
राजा महेन्द्र
भीमसेन प्रथम
राजन् वैश्रवण
(188 ई. सन् से 208 ई. सन् तक)
महादेव द्वितीय

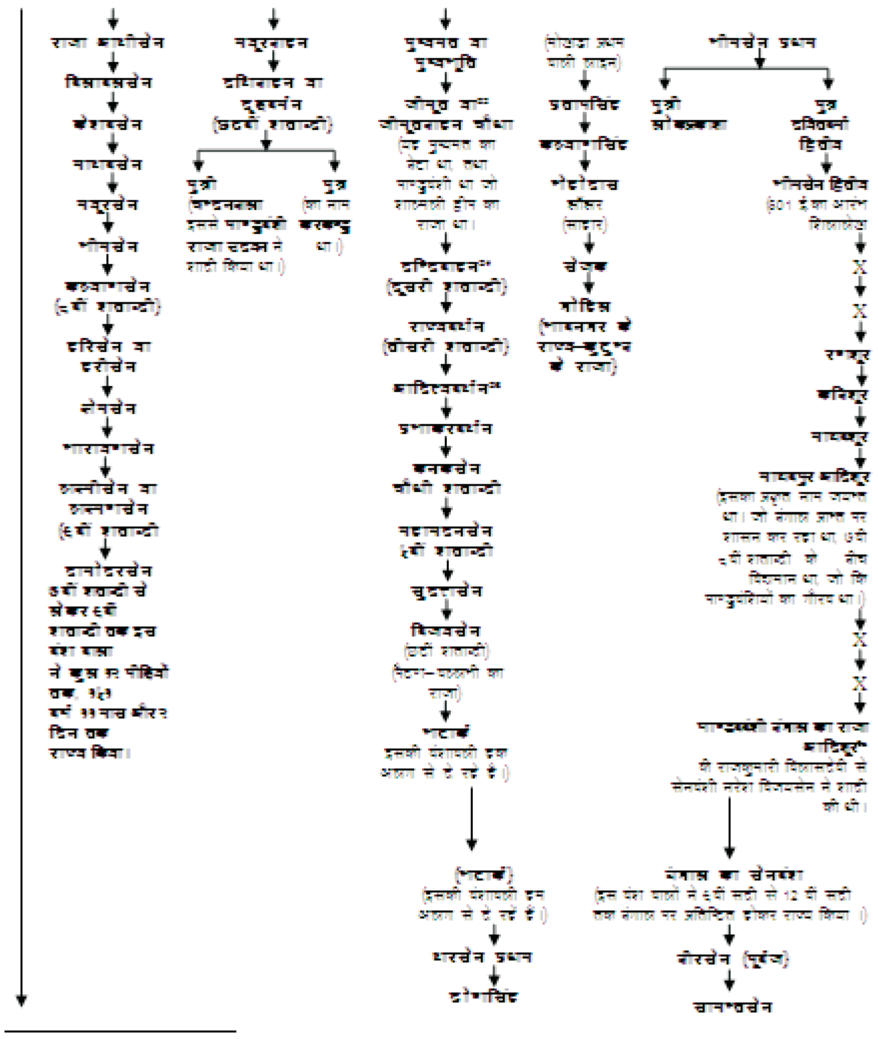

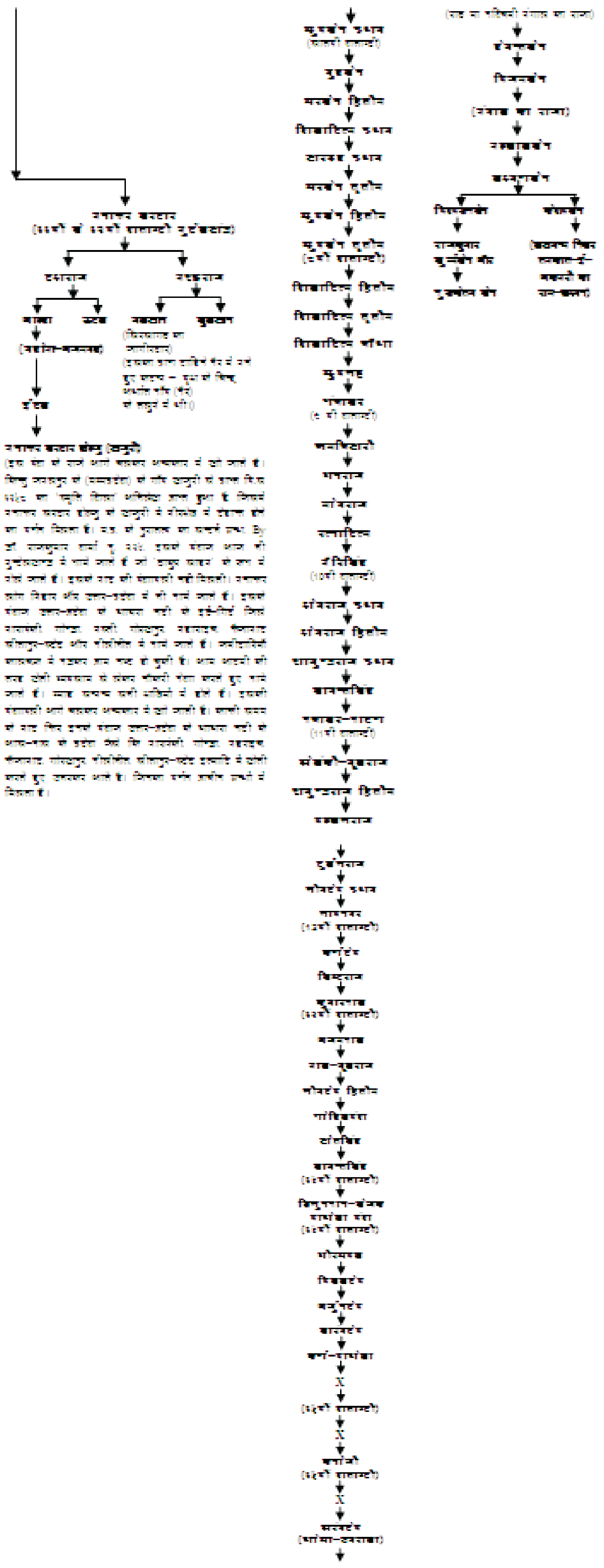

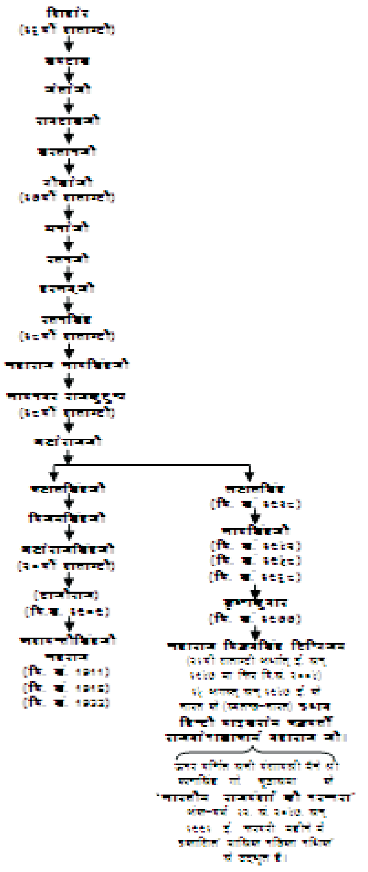

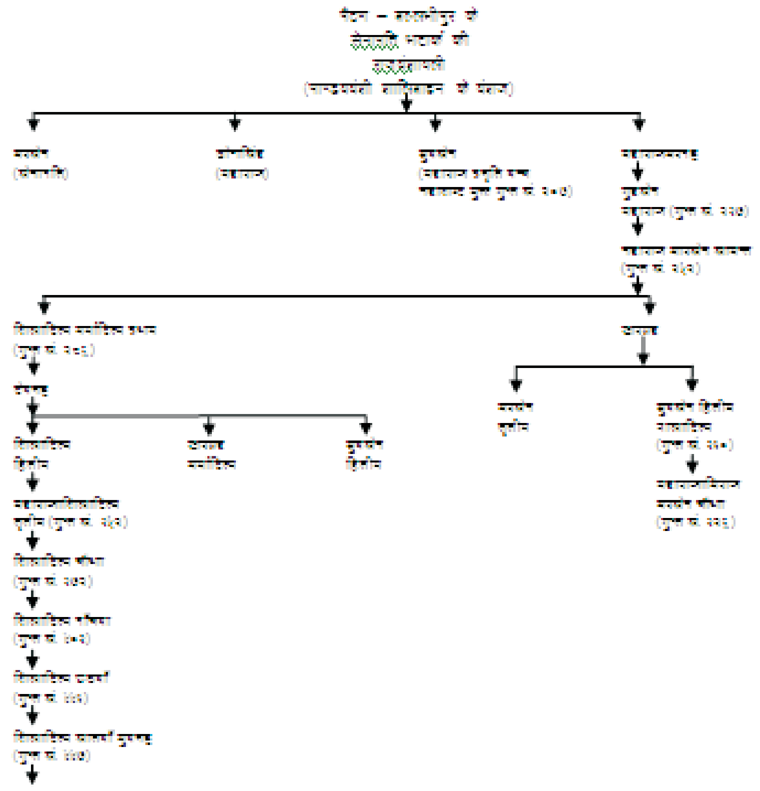

✹"पाण्डव यशेन्दु चन्द्रिका", पृ. 163.
2 रूपि. इण्डि., भाग – २६, अंश–५, पृ. 1४६, सन् 1955 ई., इसमें वज्रदत्त को भगवदत्त का भाई और अपरिपत्तन का राजा लिखा है।
3 हिडिम्बा का एक नाम कमलपालिका भी था –– पौराणिक कथाकोश, भाग –2 पृ. 335
4कैप्टन हर्टकोर्ट के अनुसार हिडिम्ब के पिता का नाम टांडी अर्थात् कीचक था। हिडिम्ब से पाण्डवों के चाचा बिदुर ने शादी की, जिससे दो पुत्र पैदा हुए। भोट से भोटवंश चला –– भूटान के राजा इसी वंश के है। क्ष.व. अर्थात् क्ष.जा.सू. ठल ठाकूर बहादुरसिंह बोदासर, पृ. 142, मुखुर दूसरा पुत्र था विदुर का, जिसने 'मुक्राह' नामक गाँव बसाया। कुल्लु का नाम बाद में हुआ, वह पहले 'मुकरस' के नाम से जाना जाता था। भोट ने सुडंगी नामक स्त्री से विवाह किया। History of Kooloo and Kangara By Hatchsion and Ph.H.Vogal, page-83 और आगे बिदुर की दूसरी पत्नी से एक पुत्र और था, नाम उसका अनश्वन था, महाभारत कोश, By डॉ. रामकुमार राय, पृ 22. और वायु के अंश से भीमसेन की उत्पति हुई थी। 'पाण्उव यशेन्दुचन्द्रिका' By स्वामी स्वरूप दास देथा कृत (राजस्थानी महाभारत) , पृ. 147. 1993 , संपादक चन्द्र प्रकाश देवल, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली – 110 001 (☸) इस के वंशज बाबारियावाड़ में पाये जाते है।
5क्ष.व. अर्थात् क्ष.जा.सू. By ठाकुर बहादुरसिंह बोदासर पृ. 142
6History of Kooloo and Kangra By Hatchsion and Ph.H. Vogal.Page 83 , और आगे।
7महाभारत कोश, By डॉ. रामकुमार राय, पृ.22
8★An Account of the Kingdom of Nepal, By Shri Hamilton, 1819. vkSj Sketches from Nepal, By Dr. H.A. Oldefiold, 1852 , ,oa The Gurkhas An Ehnology By Major C.J, Morris, Page 56, 57, Low Price Publication, Delhi-110 052, Ist Published 1933, Reprint 1993.
▲▲वही , पृ. 59 , 63.
●Narrative of a five year Residence at Nepal] 1852 Professor R.L. Turner. Speaking at a Lectur by Captain C.J. Morris, Geographical Journal London Volume. 52 No. 3, 1900 A.D. Page 23.
●●दिग्यबिजय भूषण' ठल डॉ. भगवतीप्रसादसिंह प्रणीत ।
♦The Gurkhas An Ethnology By Captain C.J. Merris, Page, 10, 11, 14 vkSj vkxsA vkSj Journey of Literary and Archaeological Research in Nepal and North India, By Bendall C.A. Cambridge, 1886., Tribes & Castes of N.W.P. and Oudh by Crooke. W., 1986, An Account of the Kingdom of Nepal By Hamilton B., Edinburgh, 1819, Journal of the Royal Central Asian Society Vol, 18, October, 1931., Tribes and Castes of Bengal By Risley, H.H., Calcutta. 1891 History of Nepal By Wright .D., Cambridge. 1877.
"Koch Kings of Kamrupa" By E.A. Gait, Esq., I.C.S., Assame Secretarial Press. P.O. 1895. vkSj The Kacharis By the Late REV. SIDNEY ENDLE and J.D. Anderson I.C.S., Page 7 to 10,70,82 to 96 vkSj Historical and Descriptive Account of Kachari Tribes in the North Kachar Hills By Mr. Soppitt, Page 52 (Foot) to 55., Lingusitic Survey of India, By Dr. Grierson Vol III, Part & II, Calcutta, 1903, Page 1-17 and ff ,oa History of Assam By Mr. E.A. Gait's (Thacker, Sprink and Co., Calcutta, 1906), Major P.R.T. Gurdon in Journal of Asiativ Society Benga Vol. LXXIII, Part – I, No. 1, 1904 A.D.
14राजस्थान के सीकर क्षेत्र में बर्बरीक का मन्दिर भी है, जो 'श्याम बाबा खाटू' के नाम से भी जाना जाता है। "श्याम तेरे कितने नाम" फिल्म में 'बर्बरीक' का वर्णन मिलता है। बिस्तार के साथ जानने के लिए "श्याम बाबा खटू का इतिहास" ठल स्वर्गीय बाबू श्री झाबरमल शर्मा कृत ग्रन्थ पढ़िये और स्कन्दपुराण, कल्याण अंक गोरखपूर। बर्बरीक महीसागर संगम में तप किया था।
15महाभारत , गोरखपुर ऐडिशन, मूल संस्कृत में और इसके पुत्र का पता नहीं चलता , इसका वर्णन, पौ. कथाकोश , खण्ड – 2 के पृ. 335 तथा
16यह अन्जनपर्वा राजा का पुत्र था।
17राजपूत वंशावली, पृ. 270, पृथ्वीराज रासों, प्रथम भाग, पृ.50 एवं हि. भा. उ. By C. V. बैद्य, पृ. 438
18महामेघबाहन तृतीय कलिंग नरेश खारबेल का पूर्वज था, जो (186 ई. पूर्व–72 ई. पूर्व.) में हुआ था। डॉ. आर. वी. हीरालाल ने अपने ग्रन्थ 'मध्य प्रदेश का इतिहास' , पृ. 22,
22पर लिखा है कि खारबेल के वंश से 'दक्षिण कोशल का शूर' वंश सम्बन्धित था और शूरवंश, डॉ. वा. वि. मिराशी के अनुसार पाण्डववंशी का था। दक्षिण कोसल का शुरवंश घटोत्कच वंशी पाण्डववंशीय क्षत्रिय था। यह शूरा पाण्डुवंशी

नन्नराज के अभिलेख में बर्णित सुर्यघोष हैं, जिसने बुध्द के मन्दिर का निर्माण किया था। डॉ. बरूआ महामेघबाहन वंश को पुराणों में बर्णित मेघ या मघ वंश से मानते हैं और मघवंशी पाण्डववंशिओं की एक शाखा है जो पाण्डुवंशी हैं एवं कुरूवंशीय क्षत्रिय हैं।

19महामहोध्याय डॉ. मिराशी के अनुसार पाण्डुवंशीयों सोमवंशीयों में एक परम्परा थी कि पौत्र का नाम पितामह के नाम के समान ही होता था, जैसे कि मेकलवंशी भरतवल, जिसका नाम इन्द्रबल था, उसका पुत्र उदयन, उदयन का पुत्र भी इन्द्रबल था।

20पैठण–पाटन का पाण्डुवंशी ७८ई. का राजा, जो शकों के समय में हुआ था। लेकिन इसी राजा के नाम से शक–सम्बत चला । यह पाण्डववंशी राजा था। सौराष्ट्र देश ने इतिहास By स्वर्गीय शम्भुप्रसाद हरप्रसाद देशाई कृत, I.A.S. Janugrdh Page २६३–२६४. (गुजराती)

21प्रथम शताब्दी में पद्मावती नामक जगह पर राज्य करने वाला बनाफर या बनस्फर या विश्वफणि या बनाफोड या बनफोड राज्य कर रहा था। इसका समय ६० ई.सन् से १२० ई.सन् बर्षो तक रहा। पुराणों में इस शब्द की कई बिकृतियाँ दी हुई हैं यथा : बिश्वस्फणि विश्वस्फाणी, बनस्पर या बनाफर अथवा बनस्पर का उल्लेख किया गया है। इस बनस्पर या बनाफर को कनिष्क के शासन काल के तीसरे बर्ष में वह उस प्रान्त का क्षत्रप एवं गर्वनर नियुक्त। प्रथम–दूसरी शताब्दी के बाद एक समय तक राजे अधंकारमें खो जाते हैं और पुनः 11वी से 12 शताब्दी में बुन्देलखण्ड में परमादिदेव (राजा परमाल) के सेना नायक एवं मुख्यमंत्री के पद पर बनाफर सरदार आल्हा–ऊदल, मलखान एवं सुलखान के रूप में मिलते हैं। यह राजे बड़े ही लडाकू एवं अजेय शक्ति थे। इसकी वंशावली हम अलग से दे रहें है। ये सरदार दच्छराज एवं बच्छराज के पुत्र रत्न थे। 'रामचरित्र मान्स' और महाभारत ग्रन्थ के बाद सम्पूर्ण भारत वर्ष में तुलसी कृत रामायण को छोडकर यदी किसी ग्रन्थ को लोक प्रियता अगर मिली है तो वो है "आल्हा" अर्थात 'परमालसरासो' (इलियट) कृत ।

22भगवद्रोमण्डल ठल श्री भगवतसिंहजी, कोपी राइट गोण्डल नगरपालिका, प्रथम आवृत्ति 1944, दूसरी आवृत्ति 1956 (गुजराती) भाग –४, पृ. ३५६२.

23भगवद्रोमण्डल विशाल ग्रन्थ, भाग – ४, पृ. ३५६२. दूसरी शताब्दी के आस–पास तक का राजा. (गुजराती)

24यह राजा जीमूतबाहन चौथे या जीमूत का पुत्र और पुष्यभूति का पौत्र तथा जीमूतबाहन तृतीय का प्रपौत्र था। दन्दिबाहन नरेश दूसरी शताब्दी में राज्य कर रहा था। वंशावली दूसरी शताब्दी से पुष्यभूति से आगे की सभी वंशावली मैने 'पथिक' पत्रिका , फरवरी मास, सन् १६६१ वर्ष ३१, अंक–५ माननीय श्री करणसिंह गो. चूडासमा के लेख "भारतीय राज्यवंशो की परम्परा" नामक लेख से उदघृत।

25आदित्यवर्धन दन्दिवाहन का पौत्र और जीमूत या जीमूतबाहन चौथा का प्रपौत्र था। यह (राजा सौराष्ट्र देश में राज्य कर रहा था।) वंशावली दूसरी शताब्दी से पुष्यभूति से आगे की सभी वंशावली मैने "पथिक" पत्रिका, फरवरी सन् १६६१ वर्ष ३१, अंक–५, करणसिंह गो. चूडासभा के लेख "भारतीय राज्यवंशो की परम्परा" नामक लेख से उदघृत।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net